डॉ॰ शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस॰आर॰ए॰पी॰ कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A Part-1
M. I. L.
HINDI

Date:-21-01-2022

## 'कितने चौराहे' का कथानक (भाग-3)

मनमोहन के काका की पत्नी मर चुकी है। वह मनमोहन को पुत्रवत मानते हैं। उनको कोई संतान नहीं है। शुरू के दिनों में तो वे मनमोहन को ऐसे कार्यों से विरत करना चाहते है। लेकिन मनमोहन उनकी मुलाकात आश्रम के स्वामी जी के प्रभाव से काका का मन बदल जाता है। और वे शराब की दुकान पर पिकेटिंग करते हुए जेल जाते हैं। सत्याग्रह करके जेल जाने वालों को किस तरह जुलूस बनाकर फूल मालाओं से लादकर लोग जेल तक पहुँचते थे। इसकी झाँकी इस उपन्यास में विस्तार से है।

मनमोहन 'किशोर क्लब', 'स्टूडेन्टस होम' और आश्रम की गतिविधियों से जुड़ा होकर भी वह परिवार वालों की याद में कभी-कभी खो जाता है। वह माँ, पिताजी और छोटे भाई गुनी जी (जगमोहन) को याद करता रहता है। कुछ दिन बाद काका जेल से छूट जाते हैं। ये काफी बदल गए हैं। प्रियोदा की हाईस्कूल की परीक्षा होने वाली है इसीलिए मनमोहन क्लब का अध्यक्ष बनाया जाता है। भिक्षाटन के लिए उसे अपने साथियों के साथ कस्बे

Scanned by CamScanner

में निकलना पड़ता है। डॉ० शशीभूषण के लड़की की लड़की 'नीलिमा' से उसका साक्षात्कार होता है। नीलू उसे बिल्कुल दुर्गा जैसी लगती है। वह उसे देखता ही रह जाता है। नीलू की नानी भिक्षा के साथ मनमोहन को हलुआ भी खिलाती है। दूसरे रविवार को स्वामी जी से आज्ञा लेकर मनमोहन मुढिया लेने वाली टोली के साथ नहीं जाता है।

— क्रमशः जारी है...

Scanned by CamScanner